गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं का अभाव है. रोजगार के अभाव में यहां के लोग पलायन करने को मजबूर हैं. यहां की जनता यह देख चुकी है कि किस प्रकार झामुमो ने लोगों की भावना एवं अपेक्षाओं को कुचला है. **चंद्र प्रकाश चौधरी,** गिरिडीह से एनडीए प्रत्याशी

इस चुनाव में मेरा मुख्य मुद्दा पार्टी से जुड़ा एजेंडा होगा. गिरिडीह के मुद्दे संसद में रखूंगा. रोजगार का सृजन करना प्रमुख मुद्दा होगा. कोयला मजदूरों की समस्या दूर करने का प्रयास करूंगा. यहां यूपीए के सामने कोई नहीं है. **जगरनाथ महतो,** गिरिडीह से झामुमो प्रत्याशी

आमने-सामने : गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र

गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में भाजपा और झामुमो का आमने-सामने मुकाबला होता रहा है. लोकसभा चुनाव 2014 में भी इन दोनों पार्टियों के बीच मुकाबला था, जिसमें भाजपा के सांसद रवींद्र कुमार पांडेय ने झामुमो के जगरनाथ महतो को लगभग 40 हजार मतों से पराजित किया था. श्री पांडेय की संसदीय कार्यवाही के दौरान उपस्थिति 91 प्रतिशत रही. इस दौरान उन्होंने 165 बार बहस में हिस्सा लिया, जबकि 503 सवाल उन्होंने पूछे. इसके पूर्व इस सीट पर लोकसभा चुनाव 2004 में झामुमो का कब्जा था. झामुमो के टेकलाल महतो गिरिडीह के सांसद थे. 2009 में वर्तमान सांसद श्री पांडेय ने टेकलाल महतो को हरा कर भाजपा को यह सीट दिलायी थी. 2014 के चुनाव में श्री महतो का निधन होने की वजह से झामुमो ने जगरनाथ महतो को उतारा था. श्री महतो दूसरे नंबर पर रहे. इस बार के चुनाव में भाजपा ने अपना प्रत्याशी नहीं दिया है. भाजपा ने यह सीट एनडीए गठबंधन को सौंप दी है. इस सीट से आजसू पार्टी के चंद्रप्रकाश चौधरी एनडीए उम्मीदवार बनाये गये हैं. एनडीए गठबंधन को एक बार फिर से झामुमो के टिकट पर जगरनाथ महतो चुनौती देंगे.

विकास के साथ-साथ आधारभूत संरचना मजबूत की : रवींद्र पांडेय

राकेश वर्मा ▷ बेरमो

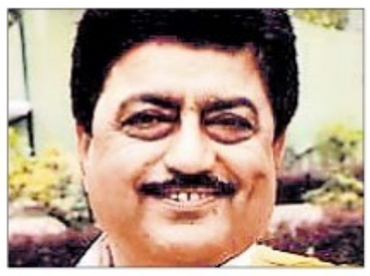

पांच साल के कार्यकाल में गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में विकास के लिए हर क्षेत्र में काम किया. कई योजनाएं धरातल पर भविष्य में उतरेंगी. आधारभूत संरचना को मजबूत बनाने पर विशेष जोर दिया. 24 घंटे में 18 घंटे लोगों के बीच काम करता रहा. अटल जी के समय कोडरमा रेल लाइन का शिलान्यास हुआ. लेकिन, कोडरमा के बाद काम रुक गया. दिल्ली में दबाव देकर महेशपुर तक काम चालू कराया. पारसनाथ स्टेशन से गिरिडीह तक रेल लाइन निर्माण का मामला उठाया. जिसे स्वीकृति मिल गयी है. गोमो जंक्शन पर फ्लाई ओवर छह माह में तैयार हो जायेगा. डुमरी-गिरिडीह-मधुपूर टू लेन निर्माण की स्वीकृति परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मिल कर दिलायी. गिरिडीह शहर को रिंग रोड से जोड़ने की स्वीकृति दिलायी. राज्य सरकार द्वारा जमीन का मुआवजा देने के बाद इसका काम शुरू हो जायेगा. धनबाद-गोविंदपुर-महाराजगंज रेल लाइन का सर्वे हो गया है. नीति आयोग में योजना चली गयी है. देवीपुर में एम्स लाने में गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे का सर्पोट किया. गिरिडीह से कोलकाता के लिए पहले बोगी लगती थी, जो बंद हो गयी थी. इसे पुनः जुड़वाया. गिरिडीह शहर में इंटीग्रेटेड पावर की व्यवस्था करायी. पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन से 69 करोड़ की लागत से केबलिंग सिस्टम किया जा रहा है. गिरिडीह नगर निगम को अमृत योजना से जुड़वाया. इसके तहत अटल पार्क, सीताराम उपाध्याय पार्क चिल्ड्रेन पार्क का निर्माण हो रहा है. जैनामोड़ से लेकर डुमरी टू लेन सड़क की स्वीकृति दिलायी. गिरिडीह एयरपोर्ट को डेवलप करने का प्रस्ताव दिया है. गिरिडीह में पहला ब्लड बैंक खुलवाया. सबसे बड़ा काम बंद डीसी लाइन को पुनः चालू कराने में अहम भूमिका निभायी. चालू होने के बाद इस लाइन से रेलवे को अभी तक 18 सौ करोड़ का प्रॉफिट हो चुका है. फुसरो बाजार में विद्युतीकरण का कार्य तथा जैनामोड़ में ग्रिड लाया. हटिया-आनंद विहार, हावड़ा-भोपाल ट्रेनों का ठहराव होने जा रहा है. बेरमो कोलफील्ड में आठ माह से बंद कइ कोलियरियों में लोकल सेल को चालू कराया. बीसीसीएल के ब्लॉक एक से ब्लॉक छह तक सीएमडी से मिल कर लोकल सेल चालू कराया. सीटीपीएस व बीटीपीएस में नया पावर प्लांट आया. गोमिया स्थित झुमरा पहाड़ पर सोलर लाइट की व्यवस्था की गयी. ठेका मजदूरों का वेज बढाया. पारा शिक्षक, सेविका, सहायिका, जलसहिया व साक्षरताकर्मियों का मामला लोकसभा में उठाता रहा.

सांसद का दावा

वर्ष 2014 के लोस का चुनाव परिणाम

रवींद्र कुमार पांडेय : भाजपा : 391913
जगरनाथ महतो : झामुमो : 351600

वर्ष 2009 के लोस का चुनाव परिणाम

रवींद्र कुमार पांडेय : भाजपा : 233435
स्व टेकलाल महतो : झामुमो : 138697

वर्ष 2004 के लोस का चुनाव परिणाम

स्व टेकलाल महतो : झामुमो : 350255
रवींद्र कुमार पांडेय : भाजपा : 200461

सांसद का कोई ऐसा काम नहीं, जो विकास कहलाये : जगरनाथ महतो

संवाददाता ▷ बेरमो

पिछला लोकसभा चुनाव हारने के बाद भी मैं संसदीय क्षेत्र के लोगों के बीच सक्रिय रहा. लोगों के सुख-दुख में सदैव खड़ा रहने का काम किया. जिसने भी किसी मामले में मुझे जिस वक्त भी बुलाया, मैंने वहां हर हाल में पहुंचने का काम किया. विधानसभा से लेकर सड़क तक कई ज्वलंत मुद्दों को लेकर संघर्षरत रहा. चाहे वह पारा शिक्षकों का मामला हो या फिर आंगनबाड़ी सेविका सहायिका या फिर रसोईया का मामला. स्थानीय नीति, सीएनटी-एसपीटी एक्ट में संशोधन का विरोध किया. विधानसभा के बजट सत्र में मैंने कहा था कि जब तक कृषि को उद्योग का दर्जा नहीं दिया जाता है, तब तक कृषि का विकास असंभव है. झारखंड से बाहर के शिक्षकों की बहाली को लेकर मुखर रहा. बिजली बिल में बढ़ोतरी का विरोध किया. पिछले पांच साल में सांसद व सरकार का कोई ऐसा कार्य नजर नहीं आता है, जिसे विकास की श्रेणी में रखा जा सके. बीसीसीएल की दामोदा कोलियरी बंद हो गयी. वहीं दुगदा वाशरी की स्थिति दयनीय है. डीवीसी के सीटीपीएस की एक नंबर व दो नंबर यूनिट बंद हो गयी. सेल के भंडारीदह रिफैक्ट्रीज संयंत्र में फायर ब्रिक्स का बनना बंद हो गया. सीसीएल के ढोरी एरिया का सीएचपी बंद गया. इससे डेढ़ सौ मजदूर बेरोजगार हो गये. आज तक डीआरएंडआरडी चालू नहीं हुआ. कथारा एरिया में स्वांग व जारंगडीह यूजी माइंस बंद हो गया. सीसीएल कथारा व स्वांग वाशरी के करीब दो सौ क्लीनिंग मजदूरों को काम से बैठा दिया गया. कथारा व ढोरी के सैकड़ों प्राइवेट सुरक्षा गार्डों को काम से बैठा दिया गया. सीसीएल व बीसीसीएल के कई कोलियरियों में कोयले की लोकल सेल की स्थिति चरमरायी हुई है. जिससे लोडिंग मजदूरों व ट्रक मालिकों के समक्ष रोजी-रोटी का सवाल खड़ा हो गया है. कुल मिला कर इन पांच सालों में नये उद्योग धंधे तो नहीं खुले, बल्कि जो चल रहे थे उसे भी केंद्र की मोदी सरकार ने बंद कर दिया. रोजगार सृजन का कोई काम नहीं हुआ. डीसी लाइन को बंद कर पुनः चालू किया गया. सवाल है जब लाइन ठीक नहीं थी तो उस पर अब कैसे ट्रेन चल रही है. अभी तक इस रूट पर डीसी ट्रेन को चालू नहीं किया गया, जो इस क्षेत्र के लोगों को जीविकोपार्जन के अलावा विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का माध्यम बन सकता है. इसके अलावा इस रूट में 19 ट्रेनें बंद कर दी गयीं. कई जगहों पर रेलवे लाइन पर ओवरब्रिज नहीं बना. गोमो-बरकाकाना रूट में कोई नई ट्रेन नहीं चली.

विपक्ष का आरोप

गप्पू चचा

हमसे का भूल हुई जो ये सजा...

कभी पार्टी के प्रदेश मुखिया थे, लेकिन अब संतरी से भी बदतर हाल है. वह इसे सजा मान रहे हैं. यह भी जोड़ रहे हैं कि खता नहीं मालूम.. इ बात बोलनेवाले वह अकेले नहीं है. सब मिला कर चार लोग हैं. एक तो हमेशा की तरह चुप व शांत हैं, पर बाकी गा रहे हैं... हमसे का भूल हुई.. जो ये सजा हमको मिली. पर इन तीनों में से दो, अगली लाइन नहीं गा रहे कि...अब तो चारों ही तरफ बंद है दुनिया की गली...एक ने तो रास्ता भी तलाश लिया है. एकला चोलो रे वाला. माद्दा जलजला ला देनेवाला है. होगा का इ तो बाद में पता चलेगा. एक भाई साहब अंदर से पगलाएल हैं... क्या करें क्या ना करे..ये कैसी मुश्किल हाय... वाले अंदाज में. पर तीसरे भाई साहब यानी मुखिया जी इसके बाद वाली लाइन भी गाते चल रहे हैं...अब तो ईमान-धरम की कोई कीमत ही नहीं..जैसे सच बोलने वालों की जरूरत ही नहीं...

ई ठीक है

ऐसी निकम्मी-निर्दयी और युवा विरोधी सरकार से क्या उम्मीद रखें. एक सफल परीक्षा कराना भी इनके बूते की बात नहीं है. लानत है. हां, धर्म, जात-पात और ऊंच-नीच पर लोगों को तोड़ना, आपस में लड़ाना इन्हें बखूबी आता है. सीएम साहब आप अपने कृत्यों के लिए कितनी भी माफी मांग लें. झारखंड की जनता माफ नहीं करेगी.

हेमंत सोरेन, पूर्व मुख्यमंत्री सह झामुमो के कार्यकारी अध्यक्ष

130 करोड़ भारतवासियों के लिए गर्व का पल. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को रूस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल से सम्मानित किया जायेगा. झारखंड की सवा तीन करोड़ जनता की ओर से प्रधानमंत्री जी को बधाई एवं शुभकामनाएं.

रघुवर दास, मुख्यमंत्री, झारखंड

चल पड़ा है कारवां. अब नहीं रुकेंगे. अब नहीं थकेंगे. लोगों की आस हैं हम. कांग्रेस हैं हम. कांग्रेस की नीतियों और एजेंडा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आज रांची लोकसभा उम्मीदवार सुबोधकांत सहाय जी के साथ जनसंपर्क अभियान चला रहा हूं.

अजयनाथ शाहदेव, कांग्रेस के प्रवक्ता सह रांची के पूर्व डिप्टी मेयर

यही है मेरी पसंद

सांसद ऐसा हो, जो जनता की सेवा को कर्म-धर्म माने

हमारा सांसद सिर्फ सपने दिखाने वाला नहीं, उन्हें साकार कराने वाला हो. आज हर घर में शिक्षित बेरोजगार मिलेंगे, उन्हें काम मिलना चाहिए. हमारा सांसद महिला सुरक्षा को भी पुख्ता करे. देश में आज महिला सुरक्षा के नाम पर सिर्फ बयानबाजी ही होती है. हमारा सांसद ऐसा हो जो समाजसेवा के मकसद से राजनीति में आया हो, न कि व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए. वह सभी वर्गों का विकास व उत्थान चाहता हो. उसके ऊपर आपराधिक मामले न हों. शिक्षित हो और इसके साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य की समुचित व्यवस्था, बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराने के प्रति समर्पित हो. जनता की सेवा को अपना धर्म व कर्म मान कर समाज का उत्थान करनेवाला हो.

अलका मिश्रा, गृहिणी

इनकी भी सुनें

हमारा सांसद वही बने जो किसी भी प्रकार के आपराधिक मामलों, भ्रष्टाचार से दूर हो, ताकि संसद में बाहुबलियों, दागियों को प्रवेश न मिले. उसे अपने क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक व भौगोलिक परिवेश का वास्तविक ज्ञान हो अर्थात वह इन सब से जमीनी स्तर पर जुड़ा हो. हमें राजनीति को हिकारत की नजरों से देखना बंद करना होगा क्योंकि जब तक हम समाधान का हिस्सा नहीं बनेंगे, तब तक हमें कोई हक नहीं बनता की हम उस समस्या पर उंगली उठायें. मन से निकाल कर हर तरह के खोट, लोकतंत्र के इस अस्त्र को थाम जरूर करें वोट.

मेघा रानी

एक अच्छे सांसद में लोगों के बीच एकता बनाये रखने की खूबी होनी चाहिए. लोग चाहे किसी भी जाति-धर्म के हों, उसे अपनी जनता को एक नजर से देखना चाहिए. यदि उसे सबके दिलों में जगह बनानी है और अपनी जगह भी सुनिश्चित करनी है, तो समाज के गहन मुद्दों पर खास ध्यान देना ही होगा. आरक्षण को जाति के आधार पर नहीं, बल्कि आर्थिक आधार पर लागू कराने का पक्षधर हो.

आलोक पाठक

ईमानदार, सच्चा, मानवीय मूल्यों से जुड़ा, नैतिक साहस से युक्त, हमारा सांसद सच्चा देश भक्त हो. बिना किसी भेदभाव के काम करे. सर्वे भवंतु सुखिन: का भाव रखने वाला हो. शिक्षित और उदार विचारों का हो. गांव के लोगों और सामान्य वर्ग के लोगों की समस्याओं को समझ सके. युवा वर्ग के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके.

वैष्णवी ऋषिका

हमें अपना सांसद इस आधार पर चुनना चाहिए कि वह जातिवाद व संप्रदायवाद की राजनीति से परे हट कर आम जनता और क्षेत्र की बुनियादी सुविधाओं जैसे रोजगार, शिक्षा, पलायन, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा जैसे विषयों पर ध्यान दे. क्षेत्र की समस्याओं को संसद में बुलंद आवाज के साथ रखे. उसका शिक्षित होना महत्वपूर्ण है.

आयुष कच्छप

लोकसभा चुनाव का पहला फेज : तीन सीटें, तीन तस्वीरें

भाजपा ने लगाया फिर पुराने चेहरे पर दांव, यूपीए नये खिलाड़ी के साथ

- चतरा, पलामू और लोहरदगा में भाजपा को पुराने सांसदों पर ही भरोसा
- **पलामू में पिछली बार झाविमो प्रत्याशी घूरन राम को राजद ने बनाया उम्मीदवार**
- चतरा में कांग्रेस ने विधायक मनोज यादव को दिया मौका, पिछली बार धीरज थे उम्मीदवार
- **लोहरदगा में पहली बार लोस चुनाव लड़ रहे हैं कांग्रेस के सुखदेव, रामेश्वर को नहीं मिला मौका**

ब्यूरो प्रमुख ▷ रांची

पहले चरण में राज्य की तीन सीटों पर लोकसभा चुनाव होना है. वर्तमान में तीनों सीटें भाजपा के पास है. भाजपा ने इस चुनाव में भी पुराने चेहरों पर ही दांव लगाया है. पलामू से वर्तमान सांसद बीडी राम, लोहरदगा से केंद्रीय मंत्री सुदर्शन भगत और चतरा से सुनील सिंह एक बार फिर से मैदान में हैं. राजनीतिक नफा-नुकसान और समीकरण को तौलते हुए भाजपा ने इन सीटों पर किसी का टिकट नहीं काटा. हालांकि दिल्ली में पलामू और चतरा सीट को लेकर खूब एक्सरसाइज हुआ. तरह-तरह की अटकलें लगी. चतरा सीट को होल्ड पर भी रखा गया, लेकिन फिर सुनील सिंह को ही मौका मिला.

उपचुनाव में जीत के बाद सुखदेव की पार्टी में बढ़ी साख

इधर, यूपीए नये खिलाड़ियों के साथ मैदान में है. यूपीए के घटक दल कांग्रेस और राजद के खाते में ये सीटें गयी थी. लोहरदगा से कांग्रेस ने विधायक सुखदेव भगत को मौका दिया. सुखदेव भगत का लोहरदगा उपचुनाव में जीत के बाद पार्टी में साख बढ़ा है. वह पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ेंगे. कांग्रेस ने पुराने चेहरे रामेश्वर उरांव को मौका नहीं दिया. रामेश्वर उरांव लगातार दो बार लोहरदगा सीट से हारे. पिछले चुनाव में वह भाजपा के सुदर्शन भगत से कांटे की टक्कर में लगभग सात हजार वोट से हारे थे.

राजद में बदल दिया उम्मीदवार

उधर, पलामू में राजद ने यूपीए गठबंधन के तहत मिली सीट पर अपना उम्मीदवार बदल दिया. पिछले लोकसभा चुनाव में पलामू से झाविमो के उम्मीदवार रहे घुरन राम को राजद ने इस बार उम्मीदवार बनाया है, जबकि पिछली बार राजद ने मनोज कुमार भुइयां को मौका दिया था. वह दो लाख वोट के साथ दूसरे स्थान पर थे.

चतरा की बदली तस्वीर

वहीं चतरा में यूपीए की तस्वीर बदली है. 14 लोकसभा सीट में चतरा एकमात्र सीट है, जहां यूपीए के दलों के बीच फ्रेंडली फाइट है. यह सीट कांग्रेस के खाते में गयी थी, लेकिन इस सीट पर राजद ने सुभाष यादव को इस बार उम्मीदवार बनाया. इस सीट पर कांग्रेस ने भी प्रत्याशी दिया है. कांग्रेस ने बरही के विधायक मनोज यादव को उम्मीदवार बनाया है. इस सीट पर भी कांग्रेस का चेहरा बदल गया है. पिछली बार इस सीट से वर्तमान राज्यसभा सांसद धीरज साहू चुनाव लड़े थे. पिछले चुनाव में धीरज साहू को एक लाख 17 हजार से अधिक वोट आये थे. इस बार कांग्रेस और राजद के प्रत्याशी आमने-सामने होंगे. सीट पर यूपीए के अंदर जोरदार सेंधमारी होगी. ऐसे में भाजपा को राहत मिलेगी.

चमरा के मैदान में नहीं रहने से बदला गणित

रांची. लोहरदगा सीट से इस बार झामुमो विधायक चमरा लिंडा चुनाव मैदान में नहीं हैं. यूपीए ने राहत की सांस ली है. चुनाव में चमरा के उतरने के बाद लोहरदगा में चुनावी गणित बदल जाती. पिछले लोकसभा चुनाव 2014 में चमरा लिंडा एक लाख 36 हजार से अधिक वोट ला चुके थे. वहीं 2009 में वह दूसरे स्थान पर थे. चमरा उस चुनाव में एक लाख 44 हजार वोट लाकर सिर्फ आठ हजार वोट से भाजपा के सुदर्शन भगत से हार गये थे. उस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी रामेश्वर उरांव तीसरे स्थान थे. ऐसे में चमरा यूपीए के लिए परेशानी के सबब बने हुए थे. चमरा लिंडा तृणमूल कांग्रेस व निर्दलीय चुनाव लड़ कर भी चौंकाते रहे हैं. इस चुनाव में सुदर्शन भगत व कांग्रेस के प्रत्याशी सुखदेव भगत आमने-सामने होंगे. संघर्ष तीखा होगा. वोटों का ध्रुवीकरण तेज रहेगा. यूपीए-एनडीए जिसने भी वोटों की गोलबंदी अपने पक्ष में की, वहीं बाजी मारेंगे.

बागियों में बाबूलाल और कोड़ा ने ही दिखाया है दम

मनोज सिंह ▷ रांची

भाजपा से चार बार के सांसद रहे रामटहल चौधरी बागी हो गये हैं. उन्हें पार्टी ने 75 साल से अधिक उम्र का बता कर टिकट नहीं दिया है. इसके बावजूद चुनाव लड़ने का दावा किया है. वह 16 अप्रैल को नामांकन करेंगे. ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि वह जीतते हैं या हारते हैं. वैसे भी राज्य में पार्टी से बागी होने का पुराना इतिहास रहा है. कभी लोस तो कभी विस चुनाव के समय नेता बागी हो जाते हैं. कभी-कभी तो किसी कारणवश पार्टी छोड़कर बागी हो जाते हैं या नयी पार्टी बना लेते हैं. अगर बागियों के चुनावी इतिहास पर नजर डालें तो बाबूलाल मरांडी और मधु कोड़ा को छोड़ कोई भी लोकसभा चुनाव में सफल नहीं हुआ है. दोनों नेता विधानसभा चुनाव से पूर्व बागी हुए थे. पूर्व सीएम बाबूलाल ने भाजपा से नाराज होकर नयी पार्टी झाविमो बना ली थी. इसी पार्टी की टिकट से कोडरमा से चुनाव लड़े और भाजपा प्रत्याशी को हराया. इसी तरह पूर्व सीएम मधु कोड़ा को पार्टी ने 2005 में टिकट नहीं दिया था. निर्दलीय लड़े. चुनाव जीते और मुख्यमंत्री बने. बाद में (2009 में) वह सिंहभूम सीट से चुनाव लड़े. श्री कोड़ा ने भाजपा के प्रत्याशी बड़कुंवर गगराई को हराया था. इनके अलावा भी चुनाव के दौरान कई बागी हुई हैं, लेकिन उनका प्रदर्शन ठीक नहीं रहा है.

बागी होकर लड़े, छठे स्थान पर रहे थे चार बार के विधायक : 2005 में भाजपा ने मधु कोड़ा, रामजीलाल सारडा, दिनेश उरांव, चंद्रेश उरांव, रामचंद्र नायक आदि विधायकों का टिकट काट दिया था. इसमें मधु कोड़ा बागी प्रत्याशी के रूप में चुनाव जीते थे, जबकि चार बार के विधायक रहे रामजीलाल सारडा 6328 वोट लाकर हटिया विधानसभा सीट पर छठे स्थान पर थे. लेकिन, यहां से भाजपा प्रत्याशी हार गये थे. कांग्रेस के विधायक चुने गये थे. रामचंद्र नायक ने चुनाव नहीं लड़ा था. इसी तरह जब मधु कोड़ा निर्दलीय उम्मीदवार होकर जगन्नाथपुर से जीते थे, तो भाजपा प्रत्याशी जवाहर बानरा पांचवें स्थान पर चले गये थे.

इतिहास रहा है राजनीति में बागी होने का : संयुक्त बिहार के समय झारखंड में वनांचल आंदोलन को गति देनेवाले कई नेताओं को 1990-91 में लालू प्रसाद ने अपने पाले में कर लिया था. भाजपा से बगावत कर समरेश सिंह, इंदर सिंह नामधारी जैसे कई नेताओं ने संपूर्ण क्रांति दल बना लिया था. इसमें विधायक बनने के पूर्व से रामचंद्र नायक भी शामिल थे. इन नेताओं ने विधानसभा चुनाव भी लड़ा लेकिन शायद ही कोई विधायक बन पाया. बाद में इसका विलय जनता दल में हो गया थे. इनमें से कुछ जनता दल में गये, कुछ भाजपा में आ गये.

जयंत सिन्हा, विजय हांसदा व सुमन महतो हैं अपवाद

झारखंड की राजनीति में ज्यादातर सांसद हैं सेल्फ मेड

संजय ▷ रांची

देशज राजनीति वंशवाद व परिवारवाद को लेकर बदनाम रही है. देश भी इससे पीड़ित है तथा इस वाद से राजनीति व राजनीतिज्ञ दोनों को निजात नहीं मिल रहा. पर झारखंड में विधानसभा चुनावों को छोड़ दें, तो कुछ अपवाद को छोड़ कम से कम लोकसभा की राजनीति पर यह दोनों वाद हावी नहीं रहे हैं. झारखंड गठन के बाद से अब तक हुए तीन आम चुनाव में जीतनेवाले सांसदों ने अपने दम पर ही राजनीति की है. उन्हें किसी की विरासत या राजनीतिक जमीन उपहार में नहीं मिली. वह अपनी पीढ़ी के अकेले नेता रहे हैं. शिबू सोरेन, बाबूलाल मरांडी, सुबोधकांत सहाय, कड़िया मुंडा, अर्जुन मुंडा तथा भाजपा से अलग हुए रामटहल चौधरी तक इसी विरासत का हिस्सा रहे हैं. झारखंड में यह परंपरा बनी रहे यही कामना की जानी चाहिए.

जयंत सिन्हा

विजय हांसदा

सुमन महतो

कुछ अपवाद भी हैं, जिन्हें विरासत में मिली है राजनीति

हजारीबाग के सांसद जयंत सिन्हा तथा राजमहल के सांसद विजय हांसदा इस मामले में अपवाद हैं, जिन्हें राजनीति उनके पिता के विरासत के रूप में मिली है. एक दूसरा अपवाद भी है. झामुमो के सुनील महतो ने 2004 में जमशेदपुर सीट से जीत हासिल की थी. वर्ष 2007 में उनकी हत्या हो जाने के बाद उनकी पत्नी सुमन महतो ने झामुमो के टिकट पर ही यहां से चुनाव जीता था. इस तरह सुमन की राजनीति सेल्फ मेड न होकर अपनी दिवंगत पति की जमीन पर आधारित थी.

नोट : जमशेदपुद में दो बार हुए उपचुनाव में सुमन महतो व अजय कुमार सांसद बने थे.

झारखंड के अब तक के लोकसभा सदस्य

विजेता प्रत्याशी	2004	2009	2014
रांची	सुबोधकांत सहाय	सुबोधकांत सहाय	रामटहल चौधरी
खूंटी	सुशीला केरकेट्टा	कड़िया मुंडा	कड़िया मुंडा
जमशेदपुर	सुनील महतो	अर्जुन मुंडा	विद्युत वरण महतो
सिंहभूम	बागुन सुंब्रई	मधु कोड़ा	लक्ष्मण गिलुवा
लोहरदगा	रामेश्वर उरांव	सुदर्शन भगत	सुदर्शन भगत
पलामू	घूरन राम	कामेश्वर बैठा	बीडी राम
चतरा	धीरेंद्र अग्रवाल	इंदर सिंह नामधारी	सुनील कुमार सिंह
धनबाद	चंद्रशेखर दुबे	पीएन सिंह	पीएन सिंह
गिरिडीह	टेकलाल महतो	रवींद्र पांडेय	रवींद्र पांडेय
कोडरमा	बाबूलाल मरांडी	बाबूलाल मरांडी	रवींद्र राय
हजारीबाग	भुवनेश्वर प्रसाद मेहता	यशवंत सिन्हा	जयंत सिन्हा
दुमका	शिबू सोरेन	शिबू सोरेन	शिबू सोरेन
गोड्डा	फुरकान अंसारी	निशिकांत दुबे	निशिकांत दुबे
राजमहल	हेमलाल मुर्मू	देवीधन बेसरा	विजय हांसदा

1929 में पांच लोगों ने निकाली थी रांची की पहली रामनवमी शोभायात्रा, हजारीबाग के महावीर मंदिर से मिली प्रेरणा

अभिषेक रॉय ▷ रांची

झारखंड में रामनवमी शोभायात्रा की परंपरा काफी गौरवपूर्ण रही है. रांची में इसकी शुरुआत महावीर चौक से हुई. पहली शोभायात्रा पांच लोगों ने मिलकर निकाली थी. सबसे पहले वर्ष 1929 में डॉ रामकृष्ण लाल और उनके भाई कृष्ण लाल ने पहल की. दोनों भाइयों को साथ देने इनके तीन दोस्त जगन्नाथ साहू, गुलाब नारायण तिवारी और लक्ष्मण राम मोची भी आगे आये. उस समय शोभायात्रा आज की जैसी नहीं थी, फिर भी लोगों का सहयोग मिला और आस पास के 40-50 लोग एकजुट होकर डोरंडा के तपोवन मंदिर तक गये थे.

महावीर चौक निवासी कृष्ण लाल का ससुराल हजारीबाग था. वर्ष 1929 में वह चैत माह के पहले मंगलवार को हजारीबाग में थे. शाम को टहलने निकले, तो उन्होंने पास के ही महावीर मंदिर में लोगों की भीड़ देखी. सभी लोग जय श्री राम, जय श्री राम, बजरंग बली की जय... का जयकार कर रहे थे. उन्होंने लोगों से पूछा, तो उन्हें रामनवमी की जानकारी मिली. इसे देख वे काफी प्रभावित हुए थे.

फाइल फोटो

कपड़े से काट कर तैयार की हनुमान जी की आकृति

कृष्ण लाल ने लोगों को मंदिर में हनुमान जी का पताका लगाते देखा. इसके बाद वे एक दर्जी के पास गये, गेरुआ रंग का कपड़ा मांगा और उसपर हनुमान जी की आकृति बना दी. हनुमान जी की आकृति को कैंची से काटा और उसे दूसरे कपड़े पर जोड़ने को कहा. दर्जी ने भी अन्य पताकों की तरह रामनवमी का पताका तैयार कर दिया, जिसे कृष्ण लाल ने महावीर मंदिर में लगा दिया.

दो पताकों के साथ निकाली गयी थी पहली शोभायात्रा

कृष्ण लाल अपने ससुराल से लौटकर हजारीबाग की पूरी बात अपने बड़े भाई डॉ रामकृष्ण लाल को बतायी. इसके बाद चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी (17 अप्रैल 1929) के दिन शोभायात्रा निकालने का निर्णय लिया. इसमें दोनों भाई का सहयोग उनके तीन मित्रों ने दिया. शोभायात्रा के लिए डॉ राम ने खादी कपड़े का झंडा बनवाया. पूजा पाठ करने के बाद दो पताकों और दोस्तों के साथ तपोवन मंदिर डोरंडा के लिए निकल पड़े. शोभायात्रा देख कई लोगों ने मजाक भी उड़ाया. धीरे-धीरे लोग श्रद्धा भाव से जुट गये. इसी से शोभायात्रा की परंपरा शुरू हो गयी.

1930 से शोभायात्रा में जुटने लगे थे लोग

साल 1929 में पांच लोगों से शुरू की गयी शोभायात्रा 1930 में वृहद रूप में बदल गयी. ठीक एक साल बाद 1930 में स्व नानू भगत के नेतृत्व में रातू रोड के ग्वाला टोली से शोभायात्रा निकली. साल दर साल लोग जुड़ते गये. परंपरा बनी रहे इसके लिए पांच अप्रैल 1935 को अपर बाजार स्थित संत लाल पुस्कालय (वर्तमान में गोविंद भवन के नाम से जाना जाता है) में शोभायात्रा को लेकर बैठक हुई. इसमें रांची के कई लोग शामिल हुए. बैठक के निर्णय से श्री महावीर मंडल का गठन किया गया. मंडल के प्रथम अध्यक्ष स्व महंत ज्ञान प्रकाश उर्फ नागा बाबा और महामंत्री डॉ राम कृष्ण लाल को मनोनीत किया गया. इसके बाद स्व नानू, स्व कपिलदेव, स्व गंगा प्रसाद बुणिया, स्व जगदीश नारायण शर्मा, स्व. हरवंश लाल ओबरॉय, स्व. परशुराम शर्मा, सरयू यादव और स्व. किशोर सिंह यादव के नेतृत्व में शोभायात्रा निकलती रही.

पहली बार रामनवमी पर रांची में फहराया गया महावीरी पताका आज भी सुरक्षित है.

ये हैं रांची में रामनवमी महोत्सव के जनक एवं संस्थापक डॉ रामकृष्ण लाल व कृष्ण लाल.

साइकिल और बैलगाड़ी में निकलती थी शोभायात्रा

पहले की शोभायात्रा वर्तमान के विपरीत थी. लोगों के पास संसाधन की कमी होने से बैलगाड़ी, साइकिल और ठेले को सजाकर शोभायात्रा निकालते थे. महावीर चौक से निकलकर तपोवन और वापस लौटकर अखाड़े पर विश्राम करते थे. जहां पताकों को एकजुट कर घरों पर लगाने का काम किया जाता था. इसे लोग चैती दुर्गा पूजा के बाद निकाल ही हटाते थे.

दूसरे राज्यों से शोभायात्रा देखने पहुंचते थे लोग

स्व कृष्ण लाल के पोते अजय गुप्ता ने बताया कि शोभायात्रा साल दर साल बड़ा रूप लेता गया. साल 1960 में जब वह छह साल के थे, उस समय दादा के साथ जीप में बैठकर शोभायात्रा में शामिल होते थे. शोभायात्रा देखने रांची में घर और पड़ोस में लोग जसपुर छत्तीसगढ़, गुमला, लोहरदगा, हजारीबाग, रामगढ़ से लोग पहुंचते थे. सुबह की पूजा में शामिल होने के बाद दोपहर बाद शोभायात्रा में शामिल होते थे और अगले दिन ही अपने-अपने घर लौट जाते थे.

देखा जाये तो किसी भी पर्व व त्योहार के दो पहलू होते हैं. रामनवमी तब और अब

प्रो सुभाषचंद्र मिश्रा

देखा जाये तो किसी भी पर्व व त्योहार के दो पहलू होते हैं. एक जानना और दूसरा समझना. इस दृष्टिकोण से यदि बात रामनवमी की जाये, तो पहले की तुलना में इस पर्व को मनाने में भव्यता आयी है. उमंग भी देखा जाता है. लेकिन सादगी और श्रद्धा के साथ पर्व मनाये जाने का जो उत्साह था, वह भव्यता व उमंग में कम पड़ रहा है. बात मेदिनीनगर (तब डालटनगंज) की हो तो यहां रामनवमी मनाने की परंपरा काफी पुरानी है. हालांकि वक्त के साथ इसमें बदलाव भी आये हैं. पहले झंडे कम रखे जाते थे. लेकिन समय के साथ झंडे पताके बढ़े. पहले गांवों में एक ही जगह पर पर्व मनाये जाते थे. लेकिन अब एक ही गांवों में कई जगहों पर पूजा होने लगी. अलग-अलग मुहल्लों में झांकी बनने लगी. एक दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा की भावना भी बढ़ गयी है. ऐसे में धर्म के मर्म को समझने की जरूरत है. पर्व को जानना भी होगा और समझना भी होगा कि यह रामनवमी आखिर क्यों मनायी जाती है. जब वे लोग सेवा में थे तो उन दिनों क्या टीचर, क्या प्रोफेसर सभी जुलूस में शिरकत करते थे. नाम याद नहीं आ रहा है लेकिन उस दौर में गणेश लाल अग्रवाल उच्च विद्यालय के भी एक शिक्षक थे जो गदका खेलने के लिए मशहूर थे. रामनवमी का इंतजार रहता था. ताकि गदका का खेल देखा जा सके. प्रो. डीएन लाल गदका खेलने में माहिर थे. कहने का तात्पर्य यह है कि भव्यता के साथ पर्व मनाया जाना चाहिए. पर इसके साथ हम सभी को पुरानी चीजों को ढूंढ कर लाना होगा. डीजे की शोर में जो अच्छे लोग पर्व के दौरान घर में दुबक रहे हैं उन्हें भी अपने साथ जोड़ना होगा. हर एक की भागीदारी से रामनवमी और भव्य होगा. क्योंकि मेदिनीनगर का जो इतिहास रहा है उसके मुताबिक यहा सांप्रदायिक एकता की जड़ मजबूत है. हिंदु-मुस्लिम सबकी भागीदारी होती है. सभी गले मिल कर पर्व मनाते हैं. ऐसा दूसरे जगहों के लिए भी अनुकरणीय है. भव्यता के साथ-साथ भय न हो इसका भी ख्याल रखा जाये. पर्व की शुद्धता पर भी ध्यान देना चाहिए. यदि हम प्रभु श्री राम के आदर्शों को मानते हैं, तो जुलूस के दौरान भी वह आदर्श दिखना चाहिए.पहले खर्च कम थे. आज जैसे साधन-संसाधन भी नहीं थे. लेकिन सादगी व समर्पण का जो भाव था वह देखने को मिलता था. लोगों को इंतजार रहता था कि पर्व आने वाला है. पर आज कहीं न कहीं लोगों के मन में यह बात जरूर रहती है कि पर्व आ रहा है, बिजली गुल रहेगी. शोर-शराबे होंगे. उमंग व भव्यता का विरोध नहीं,इसका विस्तार होना चाहिए पर पर्व किसी दूसरे का कष्ट का कारण न बने इसका भी ख्याल रखा चाहिए.पलामू की जो परंपरा रही है उसे मजबूत कर इसे सादगी के साथ भव्यता मिले ऐसी रामनवमी पलामू की मिसाल है.

फाइल फोटो

प्रो सुभाषचंद्र मिश्रा

भव्य और विराट हो गया जुलूस

विजय केसरी ▷ हजारीबाग

भगवान राम के जन्मोत्सव पर महावीरी झंडा हजारीबाग में पहली बार 1918 में निकाला गया. गुरु सहाय ठाकुर, यादव बाबू वकील, जगदेव गोप, हीरा लाल महाजन, कन्हैया गोप, हरिहर प्रसाद, टीभर गोप के नेतृत्व में गोधूलि वेला में बड़ा अखाड़ा में झंडा जमा हुआ. सिर पर प्रसाद की थाल, हाथों में महावीरी झंडा, दो ढोल बजाते दो लोग आगे-आगे चल रहे थे. इस छोटे से जुलूस को बड़ा अखाड़ा से कर्जन ग्राउंड ले जाया गया. उस जुलूस ने आज ऐतिहासिक व विराट रूप ले लिया है.

तीन दिन का हुआ जुलूस: हजारीबाग में चैत नवमी व दशमी दोनों दिन यह पर्व मनाने की परंपरा शुरू हुई. रामनवमी का जुलूस चैत नवमी के दिन निकलता था. चैती दुर्गा का विसर्जन 10वीं को होता था. दोनों पर्व एक दिन आगे पीछे होने से रामनवमी का जुलूस नवमी व दशमी दोनों दिन में परिवर्तन हो गया. भगवान राम की जन्म स्थली अयोध्या में चैत नवमी को ही जुलूस समाप्त हो जाता है, किंतु हजारीबाग में नवमी व दशमी दोनों दिन जुलूस रहता है. वर्तमान समय में जुलूस का विस्तार एकादशी में भी तब्दील हो गया है.

छोटा हुआ बड़ा महावीरी झंडा: रामनवमी जुलूस में महावीरी झंडे 1970 तक काफी बड़े-बड़े होते थे. वर्तमान समय महावीरी झंडों की संख्या में कमी व आकार में भी छोटे हो गये हैं. जुलूस में नगाड़ा, ढोल व बैंजों की आवाज पर सभी लोग नाचे बिना नहीं रह पाते थे. लेकिन वर्तमान समय में ये सभी पारंपरिक वाद्ययंत्र समाप्त हो गये हैं. डीजे की आवाज से परेशानी बढ़ गयी है. लगातार तीन दिनों तक डीजे की धुन पर सवाल उठने लगे हैं. जुलूस को लोग रामनवमी मेला के नाम से पुकारते थे. चैत मास का आगमन होते लोग रामनवमी मेले का इंतजार करने लगते थे. लेकिन यह मेला अब भीड़ में खो गया है.

फाइल फोटो

महासमिति का गठन, हाथी पर अध्यक्ष घूमे: 1956-57 के समय से ही चैत महारामनवमी समिति के गठन की परंपरा शुरू हुई. उस समय गणमान्य व बुद्धिजीवी लोग पदाधिकारी बनते थे. वर्तमान समय में महासमिति में सिर्फ युवाओं की टोली रह गयी है. जब हीरा लाल महाजन महासमिति के अध्यक्ष बने थे, तब रामनवमी जुलूस में पहली बार हाथी को शामिल किया गया था. अध्यक्ष के हाथी पर बैठ कर घूमने की परंपरा समाप्त हो गयी.

जीवंत झांकी व बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं जुलूस में शामिल: 1985 के रामनवमी जुलूस में जीवंत झांकी की प्रस्तुति शुरू हुई. वर्तमान में सैकड़ों अखाड़ों द्वारा बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं बना कर निकाली जा रही हैं. रामनवमी पर्व ने पुराने कई तरीकों की परंपराओं को नये रूप में बदला है. राम हमारे पूज्य देव हैं. वे सभी के दिलों में बसते हैं. सचमुच हजारीबाग की रामनवमी बेमिसाल व ऐतिहासिक है.

श्री गुमला के आंजन में जन्मे थे श्रीराम भक्त वीर हनुमान

दुर्जय पासवान ▷ गुमला

श्री राम भक्त हनुमान का जन्म झारखंड के उग्रवाद प्रभावित गुमला जिले से 20 किमी दूर आंजनधाम में हुआ था. भगवान हनुमान की जन्म स्थली के अलावा गुमला जिले के पालकोट प्रखंड में बालि व सुग्रीव का भी राज्य था. यहां तक की शबरी आश्रम भी यहीं है, जहां माता शबरी ने भगवान राम व लक्ष्मण को जूठे बेर खिलाये थे. पंपापुर सरोवर भी यहीं है, जहां भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण के साथ रुक कर स्नान किया था.

आंजन गुफा में जन्मे थे हनुमान : गुमला से 20 किमी दूर आंजन गांव है, जो जंगल व पहाड़ों से घिरा है. आंजन एक अति प्राचीन धार्मिक स्थल है. यहीं पहाड़ की चोटी स्थित गुफा में माता अंजनी के गर्भ से भगवान हनुमान का जन्म हुआ था, जहां आज अंजनी माता की प्रस्तर मूर्ति विद्यमान है. अंजनी माता जिस गुफा में रहा करती थीं, उसका प्रवेश द्वार एक विशाल पत्थर से बंद था. जिसे एक साल पहले खुदाई कर खोला गया है. कहा जाता है कि गुफा की लंबाई 1500 फीट से अधिक है. इसी गुफा से माता अंजनी खटवा नदी तक जाती थीं और स्नान कर लौट आती थीं. खटवा नदी में एक अंधेरी सुरंग है, जो आंजन गुफा तक ले जाती है, किंतु किसी का साहस नहीं होता है कि इस सुरंग से आगे बढ़ जाये. क्योंकि गुफा के रास्ते में खूंखार जानवर व विषैले जीव-जंतु घर बनाये हुए हैं. एक जनश्रुति के अनुसार, एक बार कुछ लोगों ने माता अंजनी को प्रसन्न करने के मकसद से अंजनी की गुफा के समक्ष बकरे की बलि दे दी, जिससे माता अप्रसन्न होकर गुफा के द्वार को हमेशा के लिए चट्टान से बंद कर लिया था. लेकिन अब गुफा खुलने से श्रद्धालुओं के लिए यह मुख्य दर्शनीय स्थल बन गया है.

ड़ में माता अंजनी की

आंजन में है प्राचीन सप्त जनाश्रम : जनश्रुति के अनुसार, आंजन पहाड़ पर रामायण युगीन ऋषि मुनि जन कोलाहल से दूर शांति की खोज में आये थे. यहां ऋषि मुनियों ने सप्त जनाश्रम स्थापित किया था. यहां सभी आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध थीं, इसलिए जनाश्रम स्थापित किया गया. यहां सात जनजातियां निवास करतीं थीं. इनमें शबर, वानर, निषाद, गृद्ध, नाग, किन्नर व राक्षस थे. आश्रम के प्रभारी को कुलपति कहा जाता था. कुलपतियों में अगस्त्य, अगस्त्यभ्राता, सुतीक्ष्ण, मांडकणि, अत्रि, शरभंग व मतंग थे. छोटानागपुर में दो स्थानों पर आश्रम है. इनमें आंजन व टांगीनाथ धाम है.

360 शिवलिंग व उतने ही तालाब हैं : आंजन में शिव की पूजा की परंपरा प्राचीन है. अंजनी माता प्रत्येक दिन एक तालाब में स्नान कर शिवलिंग की पूजा करती थीं. यहां 360 शिवलिंग व उतने ही तालाब होने की संभावना है. अंजनी माता गुफा से निकल कर प्रत्येक दिन एक शिवलिंग की पूजा करती थीं. अभी भी उस जमाने के 100 से अधिक शिवलिंग व दर्जनों तालाब साक्षात उपलब्ध हैं.

नकटी देवी हैं, यहां दी जाती है बकरे की बलि : आंजन में नकटी देवी नामक देवी स्थान है. यह चक्रधारी मंदिर की तरह अति प्राचीन है. यहां विशेष अवसरों पर सफेद व काले बकरे की बलि दी जाती है. अंजनी माता के मंदिर के नीचे सर्प गुफा है, जो काफी प्राचीन है. अंजनी माता के दर्शन के बाद लोग सर्प गुफा का दर्शन करते हैं. गुफा में मिट्टी का एक टीला है, वहीं सांप को देखा जाता है. लोगों का मानना है कि यह नागदेव हैं.

माता अंजनी का कोषागार भी है : आंजन गुफा से सटा एक पहाड़ है, जिसे धमधमिया पहाड़ कहा जाता है. इस पहाड़ का आकार बैल की तरह है. इसमें चलने से एक स्थान पर धमधम की आवाज होती है. कहा जाता है कि माता अंजनी का यह कोषागार था, जहां बहुमूल्य वस्तुएं रखती थीं.

पालकोट में है बालि राजा का राज्य किष्किंधा : रामायण काल में किष्किंधा वानर राजा बालि का राज्य था. यह आज भी पंपापुर (अब पालकोट प्रखंड) में विद्यमान है. किष्किंधा ऋष्यमुख पर्वत है, जो पालकोट प्रखंड के उमड़ा गांव के समीप है. बालि ने अपने भाई सुग्रीव को किष्किंधा से मार कर भागा दिया था. इसके बाद बालि यहां हनुमान व अन्य वानरों के साथ रहने लगा था.

पंपापुर स्थित गुफा में सुग्रीव छिपा था : किष्किंधा (उमड़ा गांव) से कुछ दूरी पर एक गुफा है. जब बालि ने सुग्रीव को भागा दिया, तो सुग्रीव उसी गुफा में आकर छिप गये. आज भी यह गुफा साक्षात है और इसे सुग्रीव गुफा कहा जाता है. सुग्रीव ने गुफा के अंदर अपने आवश्यकता की सभी वस्तुएं उपलब्ध करायी थीं. गुफा के अंदर उस जमाने का बनाया गया जलकुंड भी है. गुफा से दूसरे छोर पर एक सुरंग है.

राम व लक्ष्मण रुके थे पंपापुर में : सुग्रीव गुफा के समीप ही पंपापुर नामक स्थान है. यहां सरोवर भी है. रावण द्वारा माता सीता का हरण करने के बाद राम व लक्ष्मण इसी स्थान पर आकर रुके थे. यहीं पास में राम व लक्ष्मण की मुलाकात सुग्रीव से हुई थी. सुग्रीव ने भगवान राम को अपनी पूरी कहानी सुनायी. इसके बाद भगवान राम के कहने पर सुग्रीव ने बालि को ललकारा और प्रभु राम ने छिप कर बालि को तीर से मार दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी. तब लक्ष्मण द्वारा सुग्रीव का अभिषेक कराया गया.

यहीं है शबरी का कुटिया : पंपापुर पहाड़ में शबरी आश्रम भी है. सीता की खोज करते हुए भगवान राम व लक्ष्मण, शबरी की कुटिया में आये थे. तब शबरी ने बेर खिला कर उनका आदर सत्कार किया था. आज भी यहां शबरी आश्रम है.